International Journal of Applied and Universal Research **E- ISSN No: 2395-0269**
Volume VI, Issue IV, August 2019 Available online at: www.ijaur.com

पं. प्रतापनारायण मिश्र के साहित्य में हिन्दी भाषा का उत्कर्ष

सोना पाठक
अतिथि विद्वान
हिंदी भाषा एवं विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती वि0 वि0 जबलपुर (म0प्र0)

सारांश– पं. प्रतापनारायण मिश्र ने एक लेखक, कवि और पत्रककार के रुप में विशेष प्रसिद्धि पाई थी। पं. प्रतापनारायण मिश्र ने खड़ी बोली को अपने कथ्यों की भाषा स्वीकार की। उन्होंने लगभग सम्पूर्ण साहित्य की रचना खड़ी बोली में ही की है। कथ्यों के माध्यम से जनता में निजभाषा के प्रति प्रेम की भावना भरने के प्रयास किए। राजनीतिक, सामाजिक व धर्म की प्रत्येक घटना का विषय बनाया। पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी भाषा की उन्नति के लिए विपुल साहित्य की रचना की ताकि, ऐसा साहित्य पढ़कर लोागों में अपनी भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न हो। इस युग के साहित्यकारों का हिंदी के प्रति विशेष लगाव था। उन्नीसवीं सदी में हिंदी का महत्व क्षेत्रीय न होकर राष्ट्रीय हो गया था। पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी भाषा के उत्कर्ष के लिए खूब प्रयत्न किए। वे देश की उन्नति के लिए हिंदी को आवश्यक समझते थे। हम कह सकते हैं कि पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी साहित्य के उत्कर्ष के लिए गद्य व पद्य दोनों प्रकार के साहित्य की रचना की। हिंदी में तरह तरह की पुस्तकों की रचनाएँ की इस प्रकार का साहित्य रचकर जनता में चेतना उत्पन्न करने के प्रयास किए। समाज में घट रही प्रत्येक घटना को साहित्य का विषय बनाकर अनेक प्रकार के ग्रंथों की रचना की। अन्य भाषाओं का भी मिश्र जी ने अपनी भाषा हिंदी में अनुवाद किया उनका मुख्य उद्देश्य यह था कि यह साहित्य पढ़कर लोगों में चेतना उत्पन्न हो सकती है।

मुख्य शब्दः– पं. प्रतापनारायण मिश्र, साहित्य, हिन्दी भाषा और उत्कर्ष।

प्रस्तावनाः–

पं. प्रतापनारायण मिश्र ने खड़ी बोली को अपने कथ्यों की भाषा स्वीकार की। उन्होंने लगभग सम्पूर्ण साहित्य की रचना खड़ी बोली में ही की है। कथ्यों के माध्यम से जनता में निजभाषा के प्रति प्रेम की भावना भरने के प्रयास किए। राजनीतिक, सामाजिक व धर्म की प्रत्येक घटना का विषय बनाया। उन्होंने गद्य में नाटक, निबंध पत्रकारिता, व उपन्यास इत्यादि की रचना की, इसके साथ–साथ पद्य में भी विपुल साहित्य की रचना की। प्रारंभ में तो पद्य में ये ब्रज भाषा का ही प्रयोग करते थे, लेकिन उन्होंने खड़ी–बोली में पद्य साहित्य की रचना करके जनता को देश के प्रति जागरूकता पैदा की। साहित्य में उन्होंने यथार्थ स्थिति का वर्णन इसलिए किया ताकि जनता को देश की यथार्थ स्थिति का ज्ञान हो जाए। उन्होंने अन्य लोगों को भी साहित्य सृजन करने के लिए प्रेरित किया, ताकि साहित्य में साहित्यिक चेतना आ सके। हिंदी भाषा के उत्कर्ष के लिए ही खड़ी बोली को पद्य की भाषा स्वीकार की। इस प्रकार उन्होंने खड़ी बोली में गद्य व पद्य दोनों प्रकार के साहित्य की विपुल मात्रा में रचना की। मिश्र ने उसी साहित्य को उपयोगी माना जो शिक्षाप्रद व प्रेरणादायक हो। बालोपयोगी साहित्य का भी सृजन किया, इसलिए मिश्र जी का साहित्यिक चेतना लाने में महत्वपूर्ण स्थान है। उनके साहित्य पर यह बात पूर्ण रूप से लागू होती है। कि–

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए"।

पं. प्रतापनारायण मिश्र ने साहित्य की रचना मनोरंजन प्रदान करने के लिए नहीं की, बल्कि उन्होंने उपदेशपरक व प्रेरणापरक साहित्य की रचना की। उन्होंने साहित्य के माध्यम से देश की जनता में राष्ट्रभक्ति जाग्रत करने के प्रयास किए। गद्य साहित्य की तो उन्होंने उन्नति की, साथ ही पद्य की भी उन्होंने बड़ी उन्नति की। अपने साहित्य के द्वारा देश में सुधार लाने की कोशिश की, तथा देशभक्ति पूर्ण साहित्य की रचना की। निबंधों व पत्रकारिता का भी खूब विकास किया। उस समय का प्रत्येक साहित्यकार किसी न किसी पत्रिका से जुड़ा हुआ था। साहित्य के द्वारा वे हर क्षेत्र में विकास करने की सोचते थे।

हिंदी भाषा का उत्कर्ष–

पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी भाषा की उन्नति के लिए विपुल साहित्य की रचना की ताकि, ऐसा साहित्य पढ़कर लोागों में अपनी भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न हो। इस युग के साहित्यकारों का हिंदी के प्रति विशेष लगाव था। उन्नीसवीं सदी में हिंदी का महत्व क्षेत्रीय न होकर राष्ट्रीय हो गया था। राष्ट्रीय नेता भी हिंदी को केन्द्रीय भाषा के रूप में मान्यता देते थे। **राजाराममोहन राय** को सामान्यतः अँग्रेजी का पक्षधर माना जाता हैं लेकिन उनका पहला पत्र 10 मई 1829 को प्रकाशित हुआ उसमें बंगला, अँग्रेजी और फारसी के साथ–साथ हिंदी में, भी रचनाएँ होती थी। इतना ही नहीं , **"वे स्वयं हिंदी लिखते थे अपने विचारों के व्यापक प्रचार के लिए उन्होंने जो पुस्तकें छपवाई उनमें कुछ हिंदी में भी है।"**[(1)] उस समय के सभी साहित्यकार हिंदी को राष्ट्रीय एकता के लिए आव"यक मानते थे। उनका मानना था कि बिना एकता के अँग्रेजी राज्य समाप्त न होगा। उस समय के लेखकों ने हिंदी प्रचार के लिए पत्रिकाएँ निकाली, ये साहित्यकार हिंदी को एक केन्द्रीय भाषा बनाए जाने के पक्ष में थे। अपने लेखन में राष्ट्रीय होती थी। हिंदी को एक क्षेत्र की भाषा न समझकर सम्पूर्ण देश की भाषा स्वीकारते थे। मिश्र

जी भारतेन्दु की पुस्तके न बिकने पर सम्पूर्ण देश को कोसते है, केवल हिंदी भाषी क्षेत्र को ही नहीं– **"क्या भारत भूमि निर्जीव हो गई है कि उसके बीस कोटि सन्तान में से हरिश्चन्द्र कला के दो तीन–सौ मनुष्य भी वर्ष भर में छः रूपये न दे सके।"**[2]

हिंदी के बारे में राजनेता बालगंगाधर तिलक की भी यह राय थी कि **"हिंदी भी भारत की सामान्य भाषा होनी चाहिए इस विषय में कोई प्रांतीय भाषा हिंदी का स्थान नहीं ले सकती।"**[3]

मुगलकाल तक फारसी ही अदालतों व सरकारी दफ्तरों की भाषा थी। फारसी बोलचाल की भाषा न थी इसलिए देश की जनता को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। ब्रिटिश सरकार ने एक कानून पास किया, जिसके अनुसार अदालतों में सारा कार्य देश में प्रचलित भाषाओं में ही किया जाना चाहिए। नागरी के प्रचार व प्रसार तथा उसे अदालती भाषा बनाए जाने के लिए आन्दोलन होते रहे। सभी प्रमुख नगरों में नागरी के विकास के लिए संस्थाएँ बनी। इनमें मुख्य रूप से भारतेन्दु के **'कविता वर्धिनी सभा '1870, 'तदीय समाज' 1873, राधा चरण गोस्वामी ने कविता कौमुदी सभा 1875 इत्यादि सभाओं की स्थापना हुई।** हिंदी के सभी पत्र हिंदी के उद्धार के लिए ही कार्य कर रहे थे। पं. प्रतापनारायण मिश्र ब्राह्मण के दूसरे अंक में कहा–**"हमारी भाषा नागरी है, उसी का पढ़ना, पढ़ाना हमें उचित है, कहकर हिंदी के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट करते हैं उनका हिंदी के प्रति परम आग्रह व लगाव था। हिंदी के प्रचार के लिए ही वे 'ब्राह्मण' पत्रिका को घाटे पर घाटा सहते हुए भी निकालते रहे। उन्होंने हिंदी की उन्नति और प्रचार के लिए 'रसिक समाज' की स्थापना की।** "[4] उनका कहना था कि "कब कहाँ किस जाति ने अपनी भाषा का गौरव बढ़ाएँ बिना किसी बात में उन्नति की हैं।"[5]हण्टर शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में जब हिंदी को निकाल दिया, तथा उर्दू को सरकारी कामकाज की भाषा घोषित किया गया तो उन्होंने **'ब्राहमण'** में **'भारतरोदन'** शीर्षक लम्बी कविता निकाली, उन्होंने इसमें बताया कि अँग्रेजी राज में सब कुछ चला गया अब **"रही सही भाषा इती सोऊ चाहत जान"**[6] उन्होंने नागरी के प्रचार के लिए लोगों से संघर्ष जारी रखने के लिए कहा, क्योंकि उन्हें पूर्ण विश्वास था कि नागरी को अव''य ही मान्यता मिलेगी। **"ब्राहमण"** में उन्होंने एक लेख लिखा–**हिम्मत रखों एक दिन नागरी का प्रचार ही होगा।"**[7] उनका वि''वास था कि अगर हम प्रयत्न करेंगे तो नागरी को अव''य ही स्थान मिलेगा और सरकार को हमारे सामने झुकना पड़ेगा–**" हमारे देश भक्तों और श्रम, साहस और विश्वास चाहिए, हम निश्चयपूर्वक कहते हैं यदि हमारे आर्य भाई अधीर न होंगे तो एक दिन अवश्य होगा कि भारतवर्ष भर में नागरी देवी अखण्ड राज्य करेगी और उर्दू देवी अपने संगों के घर में बैठी कोदो दरेंगीं। लोग कहते हैं, सरकार नहीं सुनती। हमारे समझ में सरकार तो सुनेगी और चार घान नाचेगी, कोई कहर सुनाने वाला तो हो। यदि मनसा, वाचा, कर्मणा, सौ दो सौ, मनुष्य भी यह संकल्प कर लें कि 'देव नागरी का प्रचारियों सर्वस्वाहा स्वाहा करिये' तो देखे तो सरकार कैसे नहीं सुनती।"**[8]

पं. प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' में नागरी की दुर्दशा का चित्र खींचा वे लिखते हैं–**"हाँ भगवति देव नागरी। तुम्हारे भाग्य न जाने कब तक ऐसे ही रहेंगे। हाय वेद से लेकर आल्हा तक ही आधार हमारी प्यारी सर्वगुणकारी नागरी के अदृष्ट में न जाने क्या लिखा है कि इस विचारी की वृद्धि के लिए हम चाहे जैसे हाय–हाय करें पर सुनने वाला कोई देख ही नहीं पड़ता। हाय! राजा अन्य देशी होने के कारण इसके गुण नहीं समझते। प्रजा मूर्ख और दरिद्र होने से इनकी गौरव रक्षा नहीं कर सकती, पर परमेश्वर को हम कहें जो सर्वज्ञ, अन्तर्यामी, दीनबंधु इत्यादि अनेक विश्लेषण विशिष्ट होने पर भी हमारी मातृभाषा को भुला बैठी है।"**[9] उन्होंने हिंदी के आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में देखा। वे सदैव देश सुधार व देशोन्नति की ही बात करते रहते थे। उस समय मिश्र जी ही सभी हिंदी धर्म भक्त उर्दू के कट्टर विरोधी हो गए थे। उर्दू का विरोध अदालती व पत्रकार भाषा होने के कारण था। उस समय उर्दू का प्रयोग बोलचाल के स्तर पर बहुत कम हो रहा था, उसे हिंदी की अपेक्षा अधिक महत्व दिया जा रहा था।

हिंदी के लिए जहाँ पं. प्रतापनारायण मिश्र सरकार से निवेदन करते हैं, वहीं वे लेखकों और जनसामान्य का भी आव्हान करते हैं, कि वे हिंदी अधिक से अधिक प्रयोग करें और हिंदी में ज्ञान – विज्ञान की पुस्तकें भी छपवाई। ये मात्र हिंदी के उपदेशक नहीं थे। उन्होंने नागरी के विकास के लिए आजीवन कार्य किया। **ब्राह्मण** नामक पत्र सें हिंदी भाषा के विकास के लिए बहुत मदद मिली। सदैव इसके विकास के लिए तत्पर रहते थे। वे चाहते थे कि **" कागज पत्तर, लेखा–जोखा, दीप तमस्सुक सबयें नागरी लिखी जाने का उद्योग करों।"**[10] उन्होंने दैनिक कामकाज की भाषा बनाने के लिए बहुत प्रयत्न किए। उनका मानना था कि हिंदी की उन्नति के बिना देश की उन्नति सम्भव नहीं। उन्होंने हिंदी में विपुल साहित्य की रचना की।

शिक्षा से सम्बन्धित साहित्य–

उन्नीसवीं शताब्दी में शिक्षा नीति निर्धारण में लार्ड मैकाले का बहुत बड़ा हाथ था। लार्ड विलियम बैंटिक के समय में लार्ड मैकाले शिक्षा समिति के अध्यक्ष होने से शिक्षा सम्बंधी महत्वपूर्ण सुझाव दिए। आज भी उनके द्वारा निर्धारित की गई भिक्षा नीति पीछा नहीं छोड़ रही हैं मैकाले की मान्यता थी कि देशी भाषाएँ बहुत ही अविकसित हैं, उनमें न साहित्य है, न विज्ञान और न ये भाषाएँ यूरोप से व्यापार के ही उपयुक्त हैं उनकी शिक्षा नीति का उद्देश्य अच्छे लोागों को तैयार करना था, क्योंकि कामकाज के लिए उन्हें अँग्रेजी शिक्षा प्राप्त आदमियों की आवश्यकता थी।

पं. प्रतापनारायण मिश्र की मान्यता थी कि इस शिक्षा ने देश की बहुत बड़ी हानि की है। वे तो ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहते थे। जो देशभक्त नागरिक तैयार कर सके। इस शिक्षा प्रणाली से बेरोजगारी भी आई, उनका मानना है कि बिना सिफारिश के उचित नौकरी नहीं मिल सकती। वे मैकाले की शिक्षा पद्धति को देश की दुर्दशा का कारण मानते हैं, उन्होंने शिक्षा में स्त्री शिक्षा व बाल शिक्षा को भी उपयोगी माना है। स्त्री शिक्षा के तो ये कट्टर समर्थक थे। बाल शिक्षा की अपेक्षा स्त्री शिक्षा पर अधिक बल देते, उस समय के तमाम लेखकों ने स्त्री भिक्षा पर बल दिया। उनका विचार था कि अगर माताएँ अशिक्षित हैं तो वे बच्चों को क्या शिक्षा देगी, स्त्री शिक्षा के द्वारा वे समाज में फैली बुराईयों में 'सती प्रथा', 'बालविवाह' इत्यादि में भी सुधार करना चाहते थे। उन्होंने स्त्री शिक्षा कें साथ–साथ बच्चों की शिक्षा की भी आव''यकता बच्चों को सही शिक्षा देना पूरे राष्ट्र के हित में हैं उन्होंने बच्चों को नैतिक शिक्षा देने की भी आव''यकता अनुभव की। **'सुचाल शिक्षा'** नाम से एक पुस्तक की रचना की। इससे नवयुवकों में सुचरित्रता, स्वावलम्बन, देशानुराग, आदि गुणों के समावेश की भी चर्चा की।

पद्य साहित्य की उन्नति (खडी बोलो में)–भारतेन्दु युग से पूर्व हिंदी में रीतिकाल का दौर चल रहा था। रीतिकाल में श्रृंगार को ही साहित्य का विषय बनाकर साहित्य की रचना की जा रही थी। इस काल के कवि का उद्दे''य अपने आश्रयदाता तथा सामन्तवर्ग का मनोरंजन करना था। इसलिए इस काल में यथार्थ अभिव्यक्ति सम्भव नहीं थी।

भारतेन्दु युग को गद्य साहित्य का युग कहा जाता है, क्योंकि इसी युग में गद्य का प्रारंभ हुआ था। गद्य में निबन्ध, नाटक, कहानी, जीवनी व लेख आदि का विकास हुआ, इसलिए इसे हम 'गद्यकाल' की संज्ञाा देते हैं, लेकिन उस समय कविता के प्रतिकूल आन्दोलन चला। इस युग के कवि 'साधारण प्रतिभा के लोग ' थे। उन्होंने कविता के क्षेत्र में एक नए युग की शुरूआत की। इस युग के कवियों में पुरानी कविताओं के प्रति असंतोष था, क्योंकि नई सोच के कारण ये ठीक नहीं बैठती थी। मिश्र जी ने नए भाव बोध पुरानी संरचना में पेश नहीं किया, उन्होंने तो लोकछन्दों व शिल्प का प्रयोग किया। यह सब वस्तु के अनुरूप शिल्प की खोज का परिणाम था, बदलाव का यह रास्ता आसान नहीं था इस कारण वे सृजनात्मकता के साथ–साथ नए प्रयोग करते रहे। इस काल के कवियों के लिए यह आसान कार्य नहीं था कि वे एकदम बदलाव ला सकें। वस्तु छन्द और भाषा तीनों स्तरों पर परिवर्तन के उस दौर में निरंतर बहस और संघर्ष चलता रहा। इनमें सबसे महत्वपूर्ण बहस भाषा को लेकर थी। कविता की भाषा ब्रज हो या खड़ी बोली, कवि परिवर्तन के पक्षधर थे, और यही उनकी काव्य क्षमता और उच्च प्रतिभा की निशानी हैं एक मृत और रूढ़काव्य प्रवृत्ति से अपने को अलग कर एक नए युग के आरंभ का प्रयास किया। यह प्रयास हिंदी कविता के क्षेत्र में युगान्तकारी साबित हुआ। इन सभी प्रयासों के बिना कविता असंभव थी।

भारतेन्दु युग में काव्य की भाषा प्रायः ब्रज ही रही। खड़ी बोली में तो इस युग में समृद्ध गद्य साहित्य लिखा। इस युग का कुछ साहित्य तो ब्रज भाषा में हैं, फिर ये कवि खड़ी बोली में कविताएँ लिखने लगें।

उनकी खड़ी बोली की कविताएँ **'भारत मित्र'** में प्रकाशित होती थी। **'दशरथ विलाप'** इनकी प्रसिद्ध खड़ी बोली कविता है। भारतेन्दु की मृत्यु के पश्चात् खड़ी बोली तथा ब्रज भाषा में बहुत विवाद चला। इसमें खड़ी बोलीं के पक्षधर में अयोध्याा प्रसाद खत्री और श्रीधर पाठक थे।

पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी भाषा के उत्कर्ष के लिए खूब प्रयत्न किए। वे देश की उन्नति के लिए हिंदी को आवश्यक समझते थे। जनता को हिंदी का महत्व बताते हुए कहते हैं–

"चहहु जु साँचहु निज कल्यान, तो सब मिलि भारत संतान।
जपौ निरंतर एक जबान, हिंदी हिंदू हिंदुस्तान।।
रीझे अथवा खिझै जबान, मान होय चाहै अपमान।
पै न तजौ रटिबे की बान, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।।
जिन्है नहीं निजता का ज्ञान,वे जन जीवित मृतक समान।
याते गहु यह मंत्र महान,हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।।"[11]

निष्कर्षः–

निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि पं. प्रतापनारायण मिश्र ने हिंदी साहित्य के उत्कर्ष के लिए गद्य व पद्य दोनों प्रकार के साहित्य की रचना की। हिंदी में तरह तरह की पुस्तकों की रचनाएँ की इस प्रकार का साहित्य रचकर जनता में चेतना उत्पन्न करने के प्रयास किए। समाज में घट रही प्रत्येक घटना को साहित्य का विषय बनाकर अनेक प्रकार के ग्रंथों की रचना की। अन्य भाषाओं का भी मिश्र जी ने अपनी भाषा हिंदी में अनुवाद किया उनका मुख्य उद्देश्य यह था कि यह साहित्य पढ़कर लोगों में चेतना उत्पन्न हो सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. स्वतंत्रता पूर्व हिंदी संघर्ष का इतिहास, पृ.सं. 55
2. पं. प्रतापनारायण ग्रन्थावली, पृ.सं. 318 संपादक–विजयशंकर मल्ल. प्रकाशन–नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. हिंदी आन्दोलन, सं. लक्ष्मीकांत वर्मा, पृ.सं. 23 पर उद्धत।
4. पं. प्रतापनारायण ग्रंथावली, पृ.सं. 453
5. पं. प्रतापनारायण ग्रंथावली, पृ.सं. 28
6. पं. प्रतापनारायण ग्रंथावली, पृ.सं. 28
7. पं. प्रतापनारायण ग्रंथावली, पृ.सं. 55
8. पं. प्रतापनारायण ग्रंथावली, पृ.सं. 245
9. पं. प्रतापनारायण ग्रंथावली, पृ.सं. 50

10. पं. प्रतापनारायण ग्रंथावली, पृ.सं. 38 पं. प्रतापनारायण मिश्र कवितावली पं.सं. 65, संपादक–नरेशचन्द्र चतुर्वेदी, प्रकाशन–हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागै।